www.thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2011-13

सृष्टि संवत् 1960853114
विक्रम संवत् 2070
दयानन्दाब्द 190

॥ ओ३म् ॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

E-mail : aryapsharyana@gmail.com दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : सत्यवीर शास्त्री

विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर

वर्ष : 10 अंक : 27 रोहतक, 21 दिसम्बर, 2013 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

87वें बलिदान दिवस पर विशेष....

'इदं राष्ट्राय इदन्न मम' का मूर्तरूप थे अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

❑ प्रो० ओमकुमार आर्य, उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

उन्नीसवीं शताब्दी में आर्यसमाज को ऐसे होनहार सपूत एवं विलक्षण प्रतिभा के धनी महापुरुष मिले जो 19वीं शताब्दी के अन्तिम दो दशकों के दौरान एवं 20वीं शताब्दी के प्रारम्भिक 25-30 वर्षों तक अपनी आभा से विश्व इतिहास के पन्नों को जगमगाते रहे, मानवता का पथ-प्रदर्शन करते रहे तथा इस देश के धर्म, संस्कृति के गौरव को बढ़ाकर, इसकी भव्य परम्पराओं को और अधिक सुदृढ़ एवं समृद्ध बनाकर देशवासियों के आत्मविश्वास एवं स्वाभिमान को जगाकर स्वाधीनताप्राप्ति के पथ को प्रशस्त करते रहे। ऐसा करते समय उन्होंने अदम्य राष्ट्रभक्ति का परिचय दिया और राष्ट्र के लिये अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। ऐसे कुछ उल्लेखनीय नाम हैं पंजाब केसरी लाला लाजपतराय, महात्मा हंसराज, पं० गुरुदत्त, स्वामी श्रद्धानन्द सशस्त्र क्रान्ति के अग्रदूत श्यामजी कृष्ण वर्मा आदि। इनमें इस लेख के चरित-नायक स्वामी श्रद्धानन्द ने तो गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली, शुद्धि आन्दोलन, दलितोद्धार एवं कुल मिलाकर अपने प्यारे राष्ट्र की भलाई, उन्नति एवं स्वतन्त्रता के लिए सब कुछ राष्ट्र पर वार दिया, इस हद तक वार दिया कि वे **'इदं राष्ट्राय इदन्न मम'** की भावना से जीवन्त प्रतीक बन गये, इस भावना के वे वास्तव में ही मूर्तरूप थे, ऐसा कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं है। और ऐसा करने की उनको सशक्त प्रेरणा मिली थी उनके गुरुवर युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द के दिव्य व्यक्तित्व एवं कृतित्व से।

आइये, कुछ ऐसे उदाहरण एवं घटनायें स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से लें जो इस कथन की पुष्टि करते हैं कि वे (स्वामी श्रद्धानन्द) **'इदं राष्ट्राय इदन्न मम'** के प्रतीक थे, मूर्तरूप थे, हाड़-मांस के चलते-फिरते पुतले थे। स्वामी जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व तथा राष्ट्र के प्रति किये गये उनके महनीय कार्य एवं दिये गये अपूर्व बलिदान को ठीक से समझने के लिए हमें उनके जीवन को इन चार कालखण्डों में विभाजित करके देखना होगा—

स्वामी श्रद्धानन्द जी

1. जन्म से [1856] लगभग सन् 1880 तक। एक उद्दण्ड, स्वेच्छाचारी, बिगड़ैल एवं व्यसन-ग्रस्त युवक के रूप में।

2. माहात्म्य [महात्मौचित गुण विशेष/पात्रता] प्राप्ति के पथ का पथिक सन् 1881 से लगभग 1895 तक।

3. महात्मा मुंशीराम। 1895 से लगभग 1915 तक और

4. संन्यास से 'सर्ववै पूर्णꣳ स्वाहा' पर्यन्त। सन् 1916 से 23 दिसम्बर 1926 तक।

उपर्युक्त विभाजन अपनी सुविधा की दृष्टि से किया गया है, यह कोई अन्तिम अथवा किसी वस्तुनिष्ठ पैमाने पर आधारित नहीं है। स्वामी जी परोपकार, देशोद्धार और राष्ट्रसेवा को प्रारम्भ से ही अपना मुख्य लक्ष्य बनाये हुये थे। हाँ, युवावस्था में किसी योग्य गुरु के मार्गदर्शन के अभाव में भटक गये थे। किन्तु बरेली में महर्षि दयानन्द से भेंट हो जाने के पश्चात् अपने प्रश्नों का सही समाधान उन्हें मिल गया और वे तीव्र गति से सुपथ पर चल पड़े और धीरे-धीरे महात्मा कोटि को प्राप्त हुये। उन्होंने पूरी तरह समझ लिया कि—

1. मैकाले द्वारा प्रवर्तित शिक्षा प्रणाली हमारी गुलामी का मुख्य कारण है और इससे हमारा सांस्कृतिक, धार्मिक, नैतिक पतन हो रहा है। यह हमारे सर्वनाश का मूल हेतु है। अतः इसके स्थान पर गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली लागू की जानी चाहिये। फलस्वरूप उन्होंने 1902 में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना करके शिक्षाजगत् में एक ऐतिहासिक क्रान्ति का बिगुल बजाया।

2. आर्य/हिन्दू जाति जन्म आधारित जाति कुप्रथा के कारण भयंकर अनैक्य का शिकार है तथा चालाक, कुटिल, विधर्मी धर्मान्तरण के द्वारा हमें और अधिक कमजोर कर रहे हैं। पाखण्डियों ने जाने के दरवाजे खुले छोड़ रखे हैं और आने के द्वार सब बन्द कर दिये हुये हैं। स्वामी जी ने अविलम्ब शुद्धि आन्दोलन प्रारम्भ करके विधर्मियों में खलबली पैदा कर दी। इसी शुद्धि आन्दोलन के चलते ईसाई, मुसलमान उनके खून के प्यासे बन गये और अन्ततोगत्वा मतांध मुस्लिम युवक अब्दुल रशीद की पिस्तौल की गोलियों से देश और वैदिक धर्म की पावन बलिवेदी पर 23 दिसम्बर 1926 को अपने प्राण न्यौछावर करके वे अमर हुतात्माओं की पंक्ति में अग्रगण्य हस्ताक्षर के रूप में अंकित हो गये।

3. महर्षि दयानन्द का यह कथन कि विदेशी राज्य चाहे कितना भी अच्छा हो, या अच्छा होने का दावा करता हो, वह स्वदेशी राज्य का स्थानापन्न नहीं बन सकता, अर्थात्—

Good governace (by foreigners) is no substitute for self governace. इसलिये देश की स्वाधीनता के लिये वे प्राणपण से स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़े और अन्त तक मोर्चे पर डटे रहे। ये तीन गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली की पुनर्स्थापना, शुद्धि आन्दोलन तथा स्वाधीनता के लये संघर्ष-वे प्रमुख बिन्दु थे जिनके इर्द-गिर्द स्वामी जी का समस्त जीवन बलिदान पर्यन्त घूमता रहा। अपने आराध्य राष्ट्रदेव की भक्ति और उपासना के लिये वे इन तीनों मोर्चों पर एक निर्भीक, दुर्जेय योद्धा बनकर जूझते रहे और **'इदं राष्ट्राय इदन्न मम'** की एक अभूतपूर्व, प्रेरणादायक, अनुकरणीय मिसाल आने वाली पीढ़ियों के लिये छोड़ गये। वे स्वाधीनता संग्राम के महानायक ही नहीं अपितु राष्ट्रमेध यज्ञ के निष्ठावान् होता भी थे जिन्होंने वेद की इस उक्ति के अनुसार

'वयं तुभ्यं बलिहृत स्याम'

अपना बलिदान राष्ट्र हेतु देकर राष्ट्र-यज्ञ को स्वयं के लिये सर्वमेध यज्ञ में परिवर्तित कर दिया। मातृभूमि के सच्चे सपूत की तरह अपने राष्ट्र की स्वतन्त्रता, एकता एवं अखण्डता के लिये—**'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः'** की वेदोक्ति के अनुरूप अपना सर्वस्व **'इदं राष्ट्राय इदन्न मम'** कहकर राष्ट्र को समर्पित कर दिया। अपनी चल-अचल सम्पत्ति राष्ट्रनिर्माण के महायज्ञ में आहुति सदृश भेंट कर दी, अपने दोनों बेटे [जो मातृविहीन थे, स्वामी जी ही उनके पिता भी थे और मां भी थे] हरिश्चन्द्र और इन्द्र अन्यों के साथ गुरुकुल में प्रविष्ट करवा दिये जहां का जीवन उस समय में बहुत ही कठोर अनुशासन, परिश्रम, तप, त्याग और नियम संयम का जीवन

शेष पृष्ठ 7 पर....

हे आत्मन्, सावधान!

❑ रमेश चन्द्र पाहूजा

न जाने क्यों इस भौतिक जगत् की चकाचौंध, भागदौड़, कोलाहल के मध्य रहते हुए भी, कुछ खाली-खाली-सा, कुछ अधूरा-सा लगता है। ईश्वर की महती कृपा है, घर है, सुन्दर परिवार है, जीवनरूपी यात्रा के लिए सब सुख-साधन भी हैं, परन्तु फिर भी आत्मा को एकान्त की तलाश है। ऐसा एकान्त जहाँ मन के संकल्प-विकल्प की गति धीमी पड़ जाये, जहाँ संकल्प-विकल्प को एक दिशा मिल जाये। आइये, दूर कहीं पहाड़ों की वादियों में खो जाते हैं। चारों ओर बादल ही बादल हैं। जैसे ही शीतल पवन का झोंका आता है, बादल की एक घटा शरीर को छू जाती है, ऐसा आभास होता है कि परमपिता परमात्मा ने अपना सारा प्यार, स्नेह ही उड़ेल दिया हो। आनन्द की एक अनुभूति हो उठती है।

इन्हीं वादियों में, एक ऋषि का आश्रम भी है। आइये, यहाँ देखते हैं क्या हो रहा है? प्रात:काल की शुभ वेला में, ऋषिवर अपने ब्रह्मचारियों के साथ मिलकर ब्रह्मयज्ञ और देवयज्ञ सम्पन्न कर चुके हैं। अग्निहोत्र की सुरभि चारों ओर फैली हुई है। ब्रह्मचारीगण गऊओं को दुह कर दुग्धपान कर चुके हैं। इतने में ऋषिवर एक ब्रह्मचारी को आदेश देते हैं। हे गोपाल! तुम इन गऊओं को अपने निरीक्षण में खोलो, उनकी गिनती करो और वन की ओर प्रस्थान करो। इनको अपनी देख-रेख में ही गति प्रदान करना। ध्यान रखना ये गऊएं आपस में ही लड़ लहूलुहान न हो जायें। मिलकर रहें, मिलकर घास चरें। ये कहीं दूर घने जंगलों में न निकल जायें। ऐसा न हो कोई शेर इन पर आ झपटे। ऐसा न हो कि कोई गऊ पहाड़ से नीचे गिर जाये और अपनी टांगें तुड़वा बैठे। सावधान! ये गऊएँ कहीं विषैली घास का सेवन न कर लें। प्रात: से लेकर लौटने तक इन पर कड़ी नजर रखना। वापिस लौटने के समय इनकी गिनती कर लेना और फिर अपने ही संरक्षण में हाँक कर सुरक्षित आश्रम में वापिस ले आना।

आइये, अब इस चित्रण के आध्यात्मिक पक्ष पर भी चिन्तन-मनन करते हैं। ऋग्वेद में एक बहुत ही सुन्दर, सारगर्भित मन्त्र आता है—

ओ३म् यत् नियानं, न्ययनं, संज्ञानं यत् प्रयाणम्। आवर्तनं, निवर्तनं, यो गोपा अपि तम् हुवे॥ (ऋग्वेद)

इस मन्त्र में आत्मा की उपमा गोपाल से की गई है, शरीर की तुलना गऊशाला से और पाँचों ज्ञानेन्द्रियों, मन और बुद्धि को गऊएँ कह कर पुकारा गया है। वेदमाता के माध्यम से परमात्मा आदेश दे रहे हैं—हे आत्मन्, हे गोपाल! सावधान! ध्यान रहे कि प्रात:काल जागने के समय से लेकर रात्रिकाल में निद्रा की गोद में जाने तक, तुम्हारी इन्द्रियों के सारे क्रिया-कलाप तुम्हारे ही निरीक्षण और संरक्षण में हों। प्रात:काल का शुभारम्भ प्रभात-वन्दना के मन्त्रों के द्वारा ही हो।

प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे, प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना।
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिम्, प्रात: सोममुत रुदं हुवेम॥

प्रात:काल की शुभ वेला में प्रकाश स्वरूप, ज्ञान स्वरूप सब ऐश्वर्यों के दाता, मित्र, वरुण स्वरूप और सर्वव्यापक प्रभु का हम आह्वान करते हैं। प्रात:काल स्मरणीय, सबका पालन-पोषण करने वाले, वेद और ब्रह्माण्ड के अधिपति, शान्त स्वरूप और पापियों को रुलाने वाले उस ईश्वर को हम पुकारते हैं। इस प्रकार ब्रह्मयज्ञ से आरम्भ कर, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ और बलिवैश्वदेव यज्ञ हमारी दिनचर्या के अभिन्न अंग हों। हे गोपाल! इन सब इन्द्रियों रूपी गऊओं के सारे कार्य तुम्हारी ही देखरेख में हों। अपने जीवन रूपी यज्ञ में ये इन्द्रियाँ, ये सप्तहोता; सुन्दर, पवित्र, सुगन्धित, पौष्टिक और हितकारी आहुतियाँ ही डालें ताकि सारे वातावरण में सुरभि ही सुरभि फैल जाए। ये तेरी ज्ञान-इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि तेरे वश में हों और उनका आपस में भी तालमेल हो। जैसे तुम आदेश दो, बुद्धि उसी के अनुसार अनुसरण करे, मन भी अपनी मनमानी न करे और सदैव शिवसंकल्प वाला हो। **अक्षभि: भद्रं पश्येम:;** ध्यान रहे, ये आँखें सदा प्रकृति की सुन्दरता को देखें। ऐसा न हो शारीरिक सुन्दरता का शिकार हो अपने जीवन को गँवा दे। **कर्णेभि: भद्रं शृणुयाम;** ये कान, प्रकृति के मधुर संगीत, वेदवाणी, ऋषि-मुनि आदि के शुभ वचनों को ही सुनें न कि अभद्र, अश्लील संगीत, निन्दा-चुगली आदि को। यह वाणी सदैव प्रभु के गुणगान करे। त्वचा भी उसी के स्पर्श का अनुभव करे। ये सभी इन्द्रियाँ, ये गऊएँ कभी विषैली घास का सेवन न करें। सन्त लोग भी यही फरमाते हैं—

खाओ-पियो छको मत, बोलो चालो बको मत, देखो-भालो तको मत।

स्वामी दयानन्द जी की भी यही शिक्षा है—

किसी भी पराई स्त्री को भरपूर दृष्टि से मत देखो।

हे आत्मन्, सायंकाल होते ही इन गऊओं को अपने निरीक्षण में सुरक्षित घर ले आना। यह न हो कि बुरी संगत में पड़ शराब-खाने, जुए-खाने की ओर भटक जाएं। इतना ही नहीं रात्रि को सोने से पूर्व भी शयन-विनय के मन्त्ररूपी लोरी द्वारा ही सुलाना। प्रात: काल से रात्रि तक ही नहीं, जन्म से लेकर मृत्यु तक इन पर नियन्त्रण रखना, न जाने कब मति मारी जाए। पंजाबी भाषा में एक ऐसी ही कहावत है—**'दूध फिटदियाँ, बुद्ध फिटदियाँ देर नहीं लगदी।'** एक बार चूक हुई नहीं कि जीवन की सारी कमाई मिट्टी में मिल गई। सन्त-महात्मा एक बोध-कथा द्वारा हमारा मार्गदर्शन करते हैं—

एक महात्मा नित्यप्रति प्रात:काल नदी पर स्नान करने जाते। आश्रम से नदी के मार्ग में एक वेश्या का घर आता था। स्नान करने के पश्चात् जब वह आश्रम की ओर लौटते तो कानों में वेश्या का आवाज सुन पड़ती, ''ओ बाबा, क्या तुम्हारी दाढ़ी में बाल ज्यादा सफेद हैं या मेरे कुत्ते के बाल? महात्मा बिना नज़र उठाये, मन्द-मन्द मुस्कराते, आश्रम की ओर बढ़ गये।'' यह क्रम बहुत दिनों तक इसी प्रकार से चलता रहा। एक बार महात्मा बीमार पड़ गये। ईश्वर की न्याय-व्यवस्था के अन्तर्गत वह मृत्यु के द्वार पर पहुँच गये। उन्होंने अपने प्रियतम शिष्य को बुलाया और आदेश दिया, ''जाओ! वेश्या को बुला लाओ।'' शिष्य को बहुत आश्चर्य और दु:ख भी हुआ कि ऐसी पवित्र आत्मा को जीवन की अन्तिम घड़ियों में यह क्या सूझ पड़ा? परन्तु आदेश का पालन करते हुए वह वेश्या को आश्रम में बुला लाया। वेश्या की ओर देख, उस महात्मा ने कहा, ''बेटी, तेरे प्रश्न का उत्तर देने का समय आ गया है। अब मैं निश्चय पूर्वक कह सकता हूँ कि मेरी दाढ़ी के बाल तुम्हारे कुत्ते के बालों से अधिक सफेद हैं।'' इतना कहने के बाद ईश्वर का ध्यान करते हुए उन्होंने प्राण त्याग दिये। उस सन्त के इन शब्दों ने, वेश्या के जीवन को एक नई दिशा दे दी।

धन्य हैं हमारे वेदों वाले ऋषि, धन्य हैं हमारे स्वामी दयानन्द जी का ब्रह्मचर्य, उनकी कठोर तपस्या, उनका ईश्वर के प्रति समर्पण। जीवन में कितने ही प्रलोभन आये, उनके ब्रह्मचर्य को खंडित करने के लिए षड्यन्त्र रचे गये, कितनी ही बाधायें आईं किन्तु वह पुण्य आत्मा कभी विचलित नहीं हुई, कभी डगमगाई नहीं। कैसा अद्भुत था उनका अपनी इन्द्रियों पर नियन्त्रण।

हे गोपाल! तुम इन ज्ञान-इन्द्रियों रूपी गऊओं को कभी स्वतन्त्र मत छोड़ो, स्वच्छन्द मत छोड़ो ऐसा न हो कि ये हरी-भरी घास को छोड़कर विषैली घास खाने लगें। ये कान, श्रोत, विद्वानों के सत् वचनों को छोड़ हार-सिंगार, अश्लील गानों की धुन सुनने के लिए लालायित हो उठें। न जाने कब काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी व्याघ्र इन पर आ झपटें। एक मनुष्य की दशा तो बहुत ही दयनीय है, क्योंकि यह एक नहीं पाँच-पाँच विषयों का दास है, रूप, रस, गन्ध, शब्द और स्पर्श का। राजा भर्तृहरि वैराग्य-शतक में एक बहुत ही सुन्दर चित्रण करते हैं—

कुरङ्ग-मातङ्ग-पतङ्ग-भृङ्ग, मीना हता पञ्चभिरेव पञ्च।
एक: प्रमादी स: कथं न हन्यात्, य: सेवते पञ्चभिरेव पञ्च॥

(राजा भर्तृहरिकृत वैराग्य-शतक)

अर्थात् हिरण, हाथी, पतंगा, भंवरा और मच्छली एक-एक विषय के दास हैं जिस कारण उन्हें मृत्यु का शिकार होना पड़ता है। परन्तु एक प्रमादी मनुष्य तो पाँचों विषयों का यानि रूप, रस, गन्ध, शब्द और स्पर्श का दास है, इसलिए उसकी दशा तो बहुत ही दयनीय है।

जब तक आत्मारूपी गोपाल शक्तिशाली होता है, आत्मा का आदेश अन्त:करण और सब ज्ञान-इन्द्रियाँ मानती हैं और व्यक्ति अपने लक्ष्य को नहीं भूलता। परन्तु कभी-कभी पूर्वजन्मों के संस्कारों के फलस्वरूप, आजकल के विषैले, दूषित वातावरण के कारण, मन और ज्ञान-इन्द्रियाँ अपनी मनमानी करने लगती हैं। आत्मा चाहते हुए भी, कुछ कर नहीं पाती,

शेष पृष्ठ 8 पर....

वह सर्व हितकारी है

इन्द्रश्च मृळयाति नो न नः पश्चादघं नशत्।
भद्रं भवाति नः पुरः ॥ (ऋ० 2.41.11)

शब्दार्थ-इन्द्रः=परमेश्वर **च**=निश्चय से **नः**=हमें **मृळयाति**=सुख ही देते हैं। **नः**=हमारे **पश्चात्**=पीछे **अघं**=पाप **न नशत्**=न लगे तो **नः पुरः** हमारे सामने **भद्रम्**=भद्र, कल्याण ही **भवाति**=होवे, होता रहे।

विनय-भाइयो! इसमें सन्देह नहीं है कि इन्द्र भगवान् तो हमें सदा सुख ही दे रहे हैं, निरन्तर हमारा कल्याण ही कर रहे हैं, फिर भी जो असुख हमारे सामने आता है, हमें दुःख देखना पड़ता है, उसका कारण यह है कि हमने अपने पीछे पाप को लगा रखा है और पाप का परिणाम दुःख होना अटल है, अनिवार्य है। यदि हमारे पीछे पाप न लगा हो तो हमारे सामने भद्र-ही-भद्र आता जाए। जब हम कोई पाप करते हैं तो समझते हैं कि वह वहीं खत्म हो गया। हम समझते हैं कि दो घण्टे पहले किया हुआ हमारा पाप तभी दो घण्टे हुए उसके कर्म के साथ ही समाप्त हो चुका, अब उसका हमसे कुछ सम्बन्ध नहीं। इस तरह हम पाप करके आगे चलते जाते हैं और चाहते हैं तथा आशा करते हैं कि आगे-आगे हमारे लिए भद्र-ही-भद्र आता जाए, पर हमें मालूम रहना चाहिए कि हमारा किया हुआ पाप चाहे हमारी आँखों के सामने नहीं खड़ा होता हो, पर वह नष्ट भी नहीं होता है। वह तो हमारे पीछे लग जाता है और तब तक हमारा पीछा नहीं छोड़ता जब तक वह हमारे आगे अभद्र, अकल्याण व दुःख के रूप में आकर हमें फल नहीं भुगा लेता, अतः याद रखिए कि हमें न दिखाई देता हुआ हमारे पीछे रहता हुआ ही हमारा पाप एक दिन हमारे आगे अभद्र व क्लेश के रूप में आता है और अवश्य आता है, जैसे कि हमारा हरेक पुण्य भी पीछे रहता हुआ, दिखाई न देता हुआ एक दिन हमारे आगे भद्र के रूप में आता है। यह हमारी कितनी मूर्खताभरी इच्छा है कि हम चाहते हैं हमारा सदा भला ही होवे, हमारे सामने सदा सुख, स्वास्थ्य, समृद्धि आदि ही आते जाएँ, पर साथ हम पाप करना भी नहीं छोड़ना चाहते! यह कैसे हो सकता है? हमारे पीछे तो हमारा नाश करता हुआ, हमारा पाप चल रहा होता है और हम मूर्खतापूर्ण आशा में यह प्रतीक्षा करते होते हैं कि हमारे सामने सुख आता होगा। यह असम्भव है, अतः आओ, आज से हम कम-से-कम आगे के लिए पाप करना तो सर्वथा त्याग दें। यदि हम विशेष पुण्य नहीं कर सकते तो कम-से-कम इतना तो सङ्कल्प कर लें कि हम अब से एक भी पाप अपने से न होने देंगे। इतना करने से भी इन्द्र भगवान् की दया से हमारे सुदिन शीघ्र ही आ जायेंगे, पाप का पीछा छूट जाने से भद्र के लिए मार्ग साफ हो जाएगा, पर यदि हम इतना भी न कर सकें तब तो इन्द्रदेव की सुख व कल्याण की वर्षा में रहते हुए भी हमारे भाग्य में तो दुःख-ही-दुःख रहेगा।

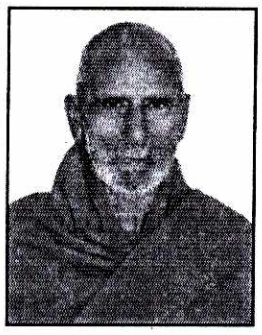

(साभार-वैदिक विनय)

—आचार्य बलदेव

पारिवारिक आध्यात्मिक सत्संग सम्पन्न

हिसार अर्बन एस्टेट नं० 2 में श्री कुलदीप सिंह ठेकेदार की 31 नम्बर कोठी में हिमाचल से पधारे वैदिक विद्वान् स्वामी देवऋषि योगतीर्थ जी का आध्यात्मिक प्रवचन हुआ। साथ में उपस्थित नर-नारियों से अन्धविश्वास, पाखण्ड को छोड़कर वेदमार्ग पर चलने का आग्रह किया तथा अपने जीवन को सन्ध्या-हवन से जोड़ने का अनुरोध किया।

सत्संग में शहर व गांव कंवारी के सैकड़ों प्रतिष्ठित पुरुषों व महिलाओं ने भाग लिया जिनमें श्री जगदीश जिन्दल, सभा पुस्तकाध्यक्ष अत्तर सिंह स्नेही, श्री धूपसिंह पूर्व सरपंच कंवारी, मा० साधुराम सिसाय, श्री चतरसिंह आर्य कंवारी, सन्दीप दुहन हवलदार, नरेन्द्र आर्य, राजेन्द्र दुहन, सुनेहरी आर्या, भरथोदेवी, सुनीता देवी, बिजेन्द्र पूनिया आदि। देशी घी का प्रसाद बांटा गया।

—राजवीर आर्य, नलवा (हिसार)

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1. आर्यसमाज मेन बाजार बल्लभगढ़ (फरीदाबाद) 11 से 12 जनवरी 2014

—प्राचार्य अभय आर्य, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

आचार्य बालकृष्ण रोहतक पहुंचे

भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार करना हमारा परम धर्मः बालकृष्ण

पतंजलि योगपीठ हरिद्वार के महामंत्री आचार्य बालकृष्ण जी महाराज, डॉ. यशदेव शास्त्री, स्वामी मुक्तानंद जी पूर्व पार्षद शिवकृष्ण आर्य के आवास पर परिजनों के साथ।

रोहतक, 12 दिसंबर। पतंजलि योगपीठ हरिद्वार के महामंत्री एवं पंतजलि विश्वविद्यालय के कुलपति वैद्यराज आचार्य बालकृष्ण महाराज ने कहा कि योग, आयुर्वेद एवं भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार करना हम सबका परम-धर्म है। इसी उद्देश्य को लेकर पंतजलि योग समिति एवं भारत स्वाभिमान के लाखों कार्यकर्ता गांव-गांव में निःस्वार्थ भाव से सेवा करने में लगे हुए हैं।

आचार्य बालकृष्ण पंतजलि योगपीठ हरिद्वार वीरवार को स्थानीय हरिसिंह कालोनी में स्थित पूर्व पार्षद एवं भारत-स्वाभिमान रोहतक के पूर्व जिलाध्यक्ष शिव कृष्ण आर्य के निवास पर आयोजित कार्यक्रम में कहा कि आयु, विद्या और बल की बढ़ौतरी योग से होती है। हमें प्रतिदिन व्यायाम करना चाहिए ताकि अपने शरीर को स्वस्थ रख सके और राष्ट्र निर्माण में सहभागी बन सकें।

पतंजलि योगपीठ ग्रामोद्योग के महामंत्री डॉ. यशदेव शास्त्री ने कहा कि स्वदेशी के माध्यम से ही ग्राम-निर्माण से राष्ट्र निर्माण होगा। पतंजलि योगपीठ के कोषाध्यक्ष स्वामी मुक्तानंद जी महाराज ने कहा कि परमात्मा संसार के कण-कण में विद्यमान है, प्रत्येक व्यक्ति ईश्वर को साक्षी मानकर परोपकार की भावना से देश-धर्म की रक्षा के लिए शक्ति और सामर्थ्य के अनुसार शुभ कर्म करते हुए जीवन व्यतीत करना चाहिए। इस अवसर पर युवा भारत हरियाणा राज्य कार्यकारिणी सदस्य सतपाल देशवाल ने देशभक्ति पूर्ण गीत 'हम बदलेंगे-युग बदलेगा' प्रस्तुत किया, जिस गीत की आचार्य बालकृष्ण सहित सभी उपस्थित व्यक्तियों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

इस अवसर भारत स्वाभिमान के पूर्व जिला अध्यक्ष के परिवारजनों सहित एसबी मॉडल स्कूल, जनता कालोनी के प्रबंधक डॉ.राजबीर रोहिल्ला, डॉ.संदीप आर्य एडवोकेट, भारत स्वाभिमान किसान प्रकोष्ठ रोहतक के पूर्व अध्यक्ष संजय ढाका, आकाश थ्रैड के मालिक सतीश चौहान, अमित तहलान, हरिओम शास्त्री सहित पंतजलि योग समिति के पूर्व सहराज्य प्रभारी डॉ.सत्यवान बरोदा आदि उपस्थित थे।

जन्मदिवस पर यज्ञ का आयोजन

ग्राम नलवा (हिसार) में 30 नवम्बर 2013 को श्री सत्यवीर दुहन के घर पर श्री राजेन्द्र के सुपुत्र श्री राहुल के 6वें जन्मदिवस पर सभा पुस्तकाध्यक्ष वानप्रस्थ अत्तर सिंह स्नेही द्वारा यज्ञ किया गया। स्नेही जी ने दो विधि और निधि पर विस्तार से प्रकाश, डाला तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की कि राहुल को अच्छा स्वास्थ्य व लम्बी आयु प्रदान करे।

अन्य आशीर्वाद देने वालों में दिलबाग सिंह दुहन कंवारी, पवन कुमार आर्य, श्रीमती सुनेहरी आर्या, ज्ञानदे देवी, मुकेश आर्या, सरोज आर्या, श्रीमती बिमला आर्या आदि उपस्थित थे। देशी घी का प्रसाद बांटा गया।

—नरेन्द्र आर्य, नलवा (हिसार)

सद्धर्म, गुरुकुलीय शिक्षा, वैदिक आध्यात्म व विज्ञानाधारित देश व समाज निर्माण को समर्पित-

महर्षि दयानन्द के आदर्श भक्त महामानव हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

❑ मनमोहन कुमार आर्य

स्वामी श्रद्धानन्द, पूर्व नाम महात्मा मुंशीराम, महर्षि दयानन्द के प्रमुख शिष्य थे। आपने महर्षि दयानन्द के बाद अपनी ज्ञानोपार्जित प्रतिभा व कार्यों से समाज, देश व विश्व को प्रभावित किया। वह अनेक ऐसे कार्य कर गये हैं जिनसे आर्य समाज सहित सारा विश्व समाज प्रेरणा ग्रहण कर उसका अनुकरण व अनुसरण कर सकते हैं। वह एकदेशीय महापुरुष न होकर विश्व पुरुष थे जिसका उदाहरण उनके अनेक कार्य हैं। गुरुकुल की स्थापना, उसका संचालन तथा उसको बुलन्दियों तक पहुंचाना उनका ऐसा कार्य है कि जिससे वह महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को सफलतापूर्वक साकार करने के लिए आर्य समाज सहित सारी दुनिया के लिए आदर्श हैं। आज सारी दुनिया में जो शिक्षा पद्धति है उसका यदि सूक्ष्म निरीक्षण करें तो पाते हैं कि शिक्षा व संस्कार वस्तुतः माता-पिता व आचार्यों से ही पड़ते हैं। माता-पिता का सन्तान के निर्माण में गौण स्थान होता है परन्तु आचार्य का प्रमुख स्थान होता है। गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली में आचार्य बालक को, माता के अपने बच्चे को गर्भ में रखने के समान, उपनयन व वेदारम्भ-संस्कार से आरम्भ कर स्नातक बनने तक अपने गुरुकुलरूपी गर्भ में रखता है। उसका अपने शिष्य ब्रह्मचारी की प्रत्येक गतिविधि पर ध्यान रहता है और उसमें वह जिस किसी भी प्रकार की त्रुटि व कमी देखता है, उसे दूर करने के लिए अपने ज्ञान, विवेक, आचरण, प्रेम-वात्सल्य व ताड़ना द्वारा उसका सुधार करता है। राम व कृष्ण के उदाहरण हमारे सामने हैं। इनके गुरुओं ने ही इन्हें इनके सम्मानित स्थान तक पहुंचाया था। चाणक्य का उदाहरण भी हमारे सामने हैं जिन्होंने अपने शिष्य चन्द्रगुप्त मौर्य का इसी प्रकार निर्माण किया और इतिहास को नई दिशा दी। महर्षि दयानन्द का उदाहरण भी हमें विदित है जो कुछ प्रश्न व शंकायें लेकर घर छोड़कर निकले थे और उनकी पूर्ण तृप्ति मथुरा के प्रज्ञाचक्षु गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती के सान्निध्य में विद्या अर्जन से पूरी हुई। महर्षि दयानन्द व गुरु विरजानन्द सरस्वती के सान्निध्य ने इस देश में ही नहीं अपितु सारे विश्व में एक आध्यात्मिक व सामाजिक क्रान्ति को जन्म दिया और सदियों से जो लोग सच्चे ईश्वर की उपासना से प्राप्त होने वाले अमृत-मुक्ति-मोक्ष के पान से वंचित होकर अपने जीवन को व्यर्थ गंवा रहे थे, उन्हें संजीवनी प्रदान कर मानव जीवन के उद्देश्य व लक्ष्य का बोध कराया व उसकी प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त किया।

मनमोहन कुमार आर्य

स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल की स्थापना का निर्णय व संकल्प क्यों लिया? इसके जहां अनेक कारण रहे होंगे वहां हमें लगता है कि महर्षि दयानन्द की दीपावली 30 अक्तूबर, सन् 1883 को मृत्यु के बाद उनका ऐसा स्मारक बनाने का विचार उनमें आया कि जिससे वह एक सजीव स्मारक भी बने और उससे उनका किया गया अधूरा कार्य भी पूरा हो सके। वह स्मारक उनकी विचारधारा के अनुरूप शिक्षा का संस्थान गुरुकुल ही हो सकता था। यहां समस्या यह भी आयी होगी कि इसके लिए प्रभूत धन, भूमि, समर्पित विद्वान आचार्यों के साथ कुछ ब्रह्मचारी जिनके माता पिता गुरुकुल में अध्ययन कराने के लिए उन्हें सौंप दें और साथ ही एक समर्पित योग्य व पात्र व्यक्ति का पूरा जीवन या समय चाहिए था जो गुरुकुल की स्थापना, भवन निर्माण व सभी आवश्यक प्रबन्ध कर सके। गुरुकुल स्थापना के पीछे यह भी कारण थे कि उन दिनों शिक्षा के लिए अंग्रेजों के शिक्षणालय, स्कूल व संस्थायें होती थीं जहां गुप्त व प्रत्यक्ष रूप से बच्चों पर ईसाइयत के संस्कार डाले जाते थे। लार्ड मैकाले ने जो शिक्षा पद्धति तैयार की थी वह भारतीयों को ईसाइयत के संस्कारों में रंगकर उन्हें उनके भारतीय वैदिक धर्म व संस्कृति से दूर करने का प्रयास ही था। प्रमुख कारण एक यह भी रहा कि स्वामी दयानन्द की स्मृति में दयानन्द ऐग्लो वैदिक कालेज का जो स्वरूप बना उसमें वेद व संस्कृत को स्थान नहीं मिला तथा कुछ ने कहा कि इनका अध्यापन समय के अनुरूप न होगा। स्वामी श्रद्धानन्द जी की पुत्री एक सरकारी संस्था द्वारा संचालित स्कूल में पढ़ती थी। एक दिन स्कूल से घर लौटने पर वह 'एक बार ईसा-ईसा बोल, तेरा क्या लगेगा मोल। ईसा मेरा राम रमैया, ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया।।' कविता को बार-बार गा-कर स्मरण कर रही थी। पूछने पर उसने बताया कि स्कूल में उन्हें वह कविता सुनाई गई और उसे याद करने के लिए कहा गया। यह पंक्तियां जिस किसी ने भी लिखी होगीं और स्कूल में बच्चों को याद कराई गईं इससे कविता के लेखक, स्कूल प्रशासन व सरकार की मंशा साफ जाहिर होती है। स्वामी श्रद्धानन्द इसे सुनकर बेचैन हो गये और भारत के भविष्य के बारे में सोचने लगे। तब उन्हें लगा कि हमारी अपनी शिक्षा प्रणाली व विद्यालय होने चाहिये और तभी हम अपनी धर्म व संस्कृति बचा सकेंगे, अन्यथा नहीं। यह घटना यद्यपि छोटी है परन्तु इसने स्वामी श्रद्धानन्द को गहराई से प्रभावित किया था। इन सब कारणों से, स्वामी श्रद्धानन्द के अकथनीय प्रयासों व तप से 2 मार्च सन् 1902 ई. को गुरुकुल की स्थापना हरिद्वार के पास कांगड़ी ग्राम में हुई। हम अनुभव करते हैं कि वह दिन भारत के सौभाग्योदय का प्रमुख दिन था। इस गुरुकुल से जो स्नातक निकलने वाले थे वह संसार मे फैले अन्धकार को चुनौती देने वाले थे जिससे मत-मतान्तरों के कृत्रिम बादल रूपी आवरण से ढके हुए सत्य 'वेद-धर्म' के भानु को उदय होना था।

गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना क्यों की गई? इसका एक कारण डी.ए.वी. कालेज का अपने मूल उद्देश्य से भटक जाना था। डी.ए.वी. कालेज जिस रूप में स्थापित हुआ और चला उससे स्पष्ट हो गया कि वहां संस्कृत व वेद आदि साहित्य का अध्ययन जैसा ऋषि दयानन्द को अभीष्ट था, वहां के कर्ता-धर्ता लाला मूलराज व उनके अनुगामी कराना नहीं चाहते थे। अतः गुरुकुल की स्थापना का उद्देश्य सामान्य शिक्षा के साथ मुख्यतः सत्य ज्ञान वेदों के अध्ययन, अध्यापन, संरक्षण, अनुसंधान व उसका प्रचार एवं प्रसार था। महर्षि दयानन्द ने अपने लघु ग्रन्थ 'भ्रान्ति निवारण' में लिखा है कि "परमात्मा की कृपा से मेरा शरीर बना रहा और कुशलता से वह दिन देखने को मिला कि वेदभाय पूर्ण हो जाये तो निःसन्देह आर्यावर्त देश में सूर्य का सा प्रकाश हो जायेगा कि जिसको मेटने और झापने को किसी का सामर्थ्य न होगा क्योंकि सत्य का मूल ऐसा नहीं है कि जिसको कोई सुगमता से उखाड़ सके, और भानु के समान ग्रहण में भी आ जावे तो थोड़े ही काल में फिर उग्रह अर्थात् निर्मल हो जायेगा।" महर्षि दयानन्द वेदों के भाष्य का कार्य पूर्ण नहीं कर सके थे। 30 अक्तूबर सन् 1883 को मृत्यु तक वह यजुर्वेद का भाष्य पूर्ण कर चुके थे। ऋग्वेद के 7वें मण्डल के 61वें सूक्त के दूसरे मन्त्र तक का भाष्य हो चुका था। शेष मन्त्रों का भाष्य किया जाना था। इसके अतिरिक्त अथर्ववेद व सामवेद का भाष्य भी अभी होना था। महर्षि दयानन्द के बाद वेदभाष्य के अवशिष्ट कार्य को पूरा करने की योग्यता उन दिनों किसी में नहीं थी। कुछ योग्यता पं. गुरुदत्त विद्यार्थी में थी जो यदि प्रयास करते तो भावी जीवन में कर सकते थे। परन्तु पं. गुरुदत्त अनेकानेक कार्यों में इतने व्यस्त थे कि यह कार्य उनके द्वारा होना सम्भावित नहीं था। सन् 1990 में 26 वर्ष की अल्पायु में उनकी मृत्यु के कारण वह सम्भावना भी समाप्त हो गई। गुरुकुल कांगड़ी ने सबसे बड़ा कार्य जहां वेद, वैदिक साहित्य व संस्कृत के अध्ययन द्वारा वेद-विद्या के क्षेत्र में अज्ञान का नाश किया वहां अनेकानेक वैदिक विद्वान आर्य समाज को दिये जिन्होंने वैदिक शिक्षा का महत्व दिग-दिगन्त फैलाया। जिन विद्वानों ने वेदभाष्य के कार्य को पूरा किया उनमें गुरुकुल कांगड़ी का विशेष योगदान है जिसका श्रेय स्वामी श्रद्धानन्द व उनके द्वारा स्थापित गुरुकुल-कांगड़ी को है। महर्षि दयानन्द ने वेदभाष्य के कार्य के पूर्ण हो जाने पर आर्यावर्त में सूर्य का सा प्रकाश होने का जो अनुमान, सम्भावना या विचार व्यक्त किया था, हमें लगता है कि वह एक प्रकार से पूर्ण हो गया है परन्तु किन्हीं स्वार्थों, आलस्य व प्रमाद के कारण संसार के लोग उसे मानने को तैयार नहीं हैं। कुछ कमियां आर्यसमाज के संगठन में भी हैं जिससे जितना वेद प्रचार का कार्य करना था वह हो नहीं पा रहा है। महर्षि दयानन्द ने वेद के आधार पर ईश्वर, जीव व प्रकृति का जो सिद्धान्त प्रमाण-पुरस्सर प्रस्तुत किया था, आज वह सर्वत्र प्रतिष्ठित है। किसी मत-मतान्तर में यह सामर्थ्य नहीं है कि वह उसे अस्वीकार करे। अतः सब चुप हैं एवं अपनी अविद्या एवं स्वार्थ आदि कारणों से उसे स्वीकार नहीं कर पा रहे है। अब केवल प्रचार के द्वारा उसे सर्वत्र मान्यता प्रदान कराने की है। प्रकारान्तर से आर्य समाज की वेद सम्बन्धी मान्यताओं को सभी मत-मतान्तरों की मौन स्वीकृति भी मिली हुई है परन्तु मत-मतान्तरों के लोगों का स्वार्थ ही उसे स्वीकार करने में बाधक है जिसमें हमारे पौराणिक वा कथित सनातन धर्मी बन्धु भी सम्मिलित हैं। गुरुकुल के जिन विद्वानों ने वेद भाष्य के कार्य को सम्पन्न किया उनमें प्रमुख स्थान पं. विश्वनाथ विद्यालंकार वेदोपाध्याय, पं. जयदेव शर्मा विद्यालंकार, पं. हरिशरण सिद्धान्तालंकार, डा. रामनाथ वेदालंकार, पं. सत्यकाम विद्यालंकार आदि का है। गुरुकुल की लोकप्रियता और सफलता का यह भी एक उदाहरण है कि 21 अक्तूबर सन् 1916 को वायसराय लार्ड चेम्सफोर्ड गुरुकुल पधारे।

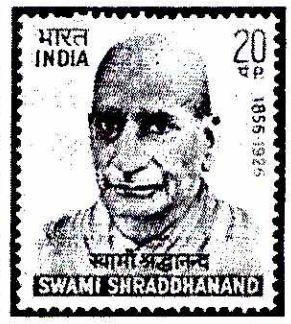

महात्मा मुंशीराम जी ने उनका स्वागत किया। पं. इन्द्र रचित 'मेरे पिता' पुस्तक में इस घटना का विस्तृत विवरण है जो पढ़ने योग्य है। इससे गुरुकुल की ख्याति में चार चांद लगे। सन् 1913 में लेटिनेण्ट गवर्नर सर जेम्स मेस्टन भी गुरुकुल पधारे थे और महात्मा मुंशीराम जी से प्रभावित हुए। उन्होंने अपने संस्करण में कहा है कि 'एक मिनिट भी उनके साथ रहते हुये उनके भावों की सत्यता और उनके उद्देश्यों की उच्चता को अनुभव न करना असम्भव है। दुर्भाग्यवश हम सब मुंशीराम नहीं हो सकते हैं।' रैम्जे मैकडानल्ड, जो बाद में ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बने, भी गुरुकुल पधारे थे। उन्होंने अपने संस्मरण में लिखा है कि 'वर्तमान काल का कोई कलाकार यदि भगवान् ईसा की मूर्ति बनाने के लिये कोई जीवित माडल लेना चाहे तो मैं इस भव्य मूर्ति की ओर इशारा करूंगा। यदि कोई मध्यकालीन चित्रकार सेंट पीटर के चित्र के लिये नमूना मांगे, तो भी मैं उसे इस जीवित मूर्ति के दर्शन करने की प्रेरणा करूंगा।'

शेष अगले अंक में....

वेदप्रचार का आयोजन

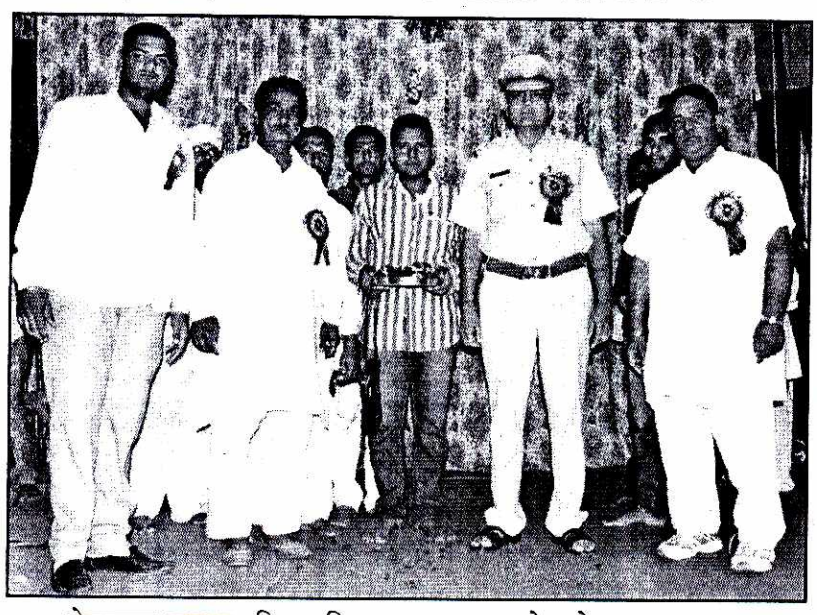

वेदप्रचार मण्डल जिला सिरसा की तरफ से गांव चामल तहसील व जिला सिरसा में सरदार भगतसिंह के जीवन के संदर्भ में वेदप्रचार कार्यक्रम किया गया। इस कार्यक्रम में श्री जगदीश सींवर ने बताया कि इनका जन्म पंजाब में बांगा गांव जिला लायलपुर (पाकिस्तान) में हुआ था। उनका पूरा परिवार आर्यसमाजी था। इस समारोह के उद्घाटन पर सदर थाना सिरसा के एस.एच.ओ. जगदीश जोशी पहुँचे। इस मौके पर गांव के सरपंच सूरजभान, चन्नासिंह, कुलवन्त सिंह, अजायब सिंह, अंग्रेज सिंह आदि अनेक पंजाबी समुदाय के लोगों ने भाग लेकर आर्यसमाज के उद्देश्यों को अपनाने के लिए प्रभावित हुए।

—जगदीश सींवर शेखूपुरिया, सिरसा

ना हीरा जन्म गवाँ प्यारे

सूबे० करतारसिंह आर्य

कर जा भला कुछ दुनिया में, ना हीरा जन्म गवाँ प्यारे।
हर दिल में तेरी याद रहे, कोई ऐसा कर्म कमा प्यारे॥
जब तक इस तन में जान रहे।
तुझे पर सेवा का ध्यान रहे॥
हो निन्दा या तारीफ तेरी, इस ओर न कान लगा प्यारे।
तुम्हें वीर माता ने जाया है।
नहीं ध्यान तुम्हें कुछ आया है॥
इक चमक निराली पैदा कर, दे दुनिया को चमका प्यारे।
ऋषि दयानन्द एक अकेला था।
बस ईश्वर एक सहेला था॥
बनकर मर्द मदांनिकले, दिया सब अन्धकार मिटा प्यारे।
अब देख कहाँ अन्धेरा है।
हुआ साफ रस्ता अब तेरा है॥
सब कांटे स्वामी ने दूर किये, अब तो हिम्मत दिखला प्यारे।

असली ईश्वर एक है, जिसने रचा संसार है।
पन्थों में नकली खुदा की हो रही भरमार है॥
खुद घड़ें पत्थर की मूर्त, शक्ल दें इन्सान की।
कहते हैं अब इसमें शक्ति पूर्ण है भगवान की॥
जड़ के आगे हाथ जोड़ें, सिर झुकाकर मांगते।
कामना पूर्ण करेगा, ऐसा नादान जानते॥
क्षीरसागर में कहीं, सुला दिया भगवान् को।
चौथे सातवें आसमां, बिठला दिया भगवान् को॥
सर्वव्यापी ईश्वर को, एक देशी कर दिया।
दूर दुनिया से बिठाया और विदेशी कर दिया॥
कोठरी में बन्द कर बाहर से ताला जड़ दिया।
क्या गजब भगवान् इनका, कैद जिसको कर दिया॥
किस तरह अज्ञानता मजहबों ने फैलाई है यह।
आपकी भी समझ में, क्या बात कुछ आई है यह॥

भेंटकर्त्ता : सूबे० करतारसिंह आर्य 'सेवक', आर्यसमाज गोहानामंडी (सोनीपत)

वैदिक सत्संग कार्यक्रम सम्पन्न

रोहतक। दिनांक. 28 अक्तूबर 2013 को मोखरा जिला रोहतक में वैदिक सत्संग हुआ। आर्यजगत् के विद्वान् आचार्य वेदमित्र जी के मार्मिक प्रवचन से अनेक महाविद्यालयों के छात्रों ने जनेऊ धारण किये। आचार्य जी ने ब्रह्मचर्य काल को जीवन का आधार कहा। केवल वही इस शरीर का आनन्द ले सकता है जो 25 वर्ष के ब्रह्मचर्य से अपने को सुदृढ़ करेगा। राम, कृष्ण आदि सभी महापुरुष ब्रह्मचर्य काल में ही आचार्यों द्वारा तरासे गये थे। कार्यक्रम का आयोजन जांगड़ा परिवार द्वारा किया गया था। आस-पास के अनेक स्त्री-पुरुष सम्मिलित हुए। इसी दिन 28 अक्तूबर को ही प्रात:काल बहु आर्यपुर में बृहद् यज्ञ आचार्य जी के सान्निध्य में हुआ। बोरस जोहड़ पर अनेक युवा व शिक्षित जन उपस्थित हुए। आचार्य जी ने प्राणायाम, योग व यज्ञ के अनेक लाभ बताये।

इसी प्रकार 1 नवम्बर 2013 को महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय में वैदिक सत्संग का आयोजन आचार्य जी के सान्निध्य में किया गया। यज्ञ में श्री जगदीश दहिया जी मुख्य यजमान बने। कार्यक्रम में छात्र, अध्यापक तथा HOD सम्मिलित हुए। आचार्य जी ने सूक्ष्म (पार्टिकल विज्ञान) की व्यवस्था को ही नहीं सूक्ष्मतम आत्माओं को शरीर, मन, इन्द्रिय भी प्रभु प्रदान करते हैं। आधुनिक वैज्ञानिक भी मनु महाराज के सूक्ष्म जीव विमान को आज मान रहे हैं। वहीं आत्मा से पूर्व सूक्ष्म मन जो प्रकृति की सूक्ष्म कृति है। आत्मा को बिना योग समाधि के जाना ही नहीं जा सकता, क्योंकि वह अति सूक्ष्म है। ऋषियों ने उनका साक्षात्कार किया है। वैशेषिक दर्शन में यह विज्ञान बतलाया गया है। कार्यक्रम के अन्त में सुन्दर भोजन की व्यवस्था की गई।

स्वामी श्रद्धानन्द एक सच्चे तपोमूर्ति थे

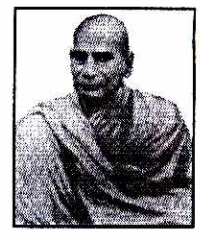

अमर हुतात्मा
स्वामी श्रद्धानन्द जी

स्वामी श्रद्धानन्द वेदों के पुजारी थे।
तपोमूर्ति, वेदज्ञ और परोपकारी थे।
सन् 1910 में गुरुकुल कांगड़ी बनाया।
सन् 1916 में गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ खुलवाया।
स्व-तप से भारत को स्वर्ग बनाया।
जामा मस्जिद पर ओ३म् ध्वज फहराया।
वे त्यागमूर्ति और सदाचारी थे।
तपोमूर्ति, वेदज्ञ और परोपकारी थे।
ज्ञान की गंगा पूरी दुनिया में बहाई।
गुरुकुल शिक्षा द्वारा हर गृहों में संध्या रचाई।
स्वामी श्रद्धानन्द शाकाहारी थे।
तपोमूर्ति, वेदज्ञ और परोपकारी थे।
तीन हजार रुपये इकट्ठा करके, हरिद्वार में एक गुरुकुल खुलवाया।
वैदिक धर्म की रक्षार्थ, अपना पूरा जीवन लगाया।
स्वामी श्रद्धानन्द एक सच्चे धर्माधिकारी थे।
तपोमूर्ति, वेदज्ञ और परोपकारी थे।

—डॉ. रवीन्द्र कुमार शास्त्री 'सोम' एम.ए., पी-एच.डी., गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ आर्यनगर सराय ख्वाजा, फरीदाबाद (हरयाणा)

मासिक सत्संग का आयोजन

आर्यसमाज सफीदों जिला जीन्द का मासिक सत्संग दिनांक 29.12.2013 दिन रविवार को होने जा रहा है जिसमें उपदेशक हरिकिशोर शास्त्री व भजनोपदेशक महाशय सुखपाल आर्य सहारनपुर (उत्तर प्रदेश) से पधार रहे हैं। समय प्रात: 8.30 से 1 बजे तक रहेगा। कार्यक्रम के उपरान्त ऋषिलंगर की व्यवस्था की जायेगी। **—वासुदेव आर्य पुरोहित**

शोक-समाचार

हिसार। गुरुकुल खारिया डोभी जिला हिसार के श्री महेन्द्रसिंह आर्य का दिनांक 4.12.2013 को निधन हो गया। आचार्य रामस्वरूप आर्य ने गाँव में ही वैदिक रीति से अन्त्येष्टि संस्कार करवाया। शरीर के वजन के बराबर हवन सामग्री डलवाई गई। इस अवसर पर स्वामी सर्वदानन्द जी, श्री अत्तर सिंह स्नेही, श्री रामस्वरूप एवं श्री जगदीश सींवर शेखूपुरिया अन्त्येष्टि-संस्कार में शामिल हुये। श्री महेन्द्रसिंह आर्य जी चार पुत्र-बलजीत सिंह, दलजीत सिंह, परमजीत सिंह, कर्मजीत सिंह एवं भरा पूरा परिवार छोड़कर गये हैं। श्रद्धाञ्जलि समारोह का आयोजन दिनांक 15.12.2013 को प्रात: 11.00 बजे किया गया। **—जगदीश सींवर शेखूपुरिया, सिरसा**

वेदमन्थन

❑ भद्रसेन, 182-शालीमार नगर, होशियारपुर-146001 # 9464064398

ओम् विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे।
इन्द्रस्य युज्यः सखा॥ (यजु० 6, 4; ऋ० 9.22.19)

शब्दार्थ-(विष्णोः) व्यापक के (कर्माणि) कार्यों को (पश्यत) देखो, समझो (यतः)=(हेतौ पञ्चमी) जिससे (ने) (व्रतानि) प्राकृतिक कर्मों से जन्य नियमों, व्यवस्थाओं को (पस्पशे) फैलाया, किया है, जो कि (इन्द्रस्य) इन्द्र (इन्द्रियां जिसकी हैं उस) का अर्थात् शरीर के स्वामी (युज्यः) निकटतम, गहरा (सखा) मित्र, समान स्थिति वाला है।

व्याख्या-इस संसार में सर्वत्र फैला हुआ एक तत्त्व, व्यवस्थापक प्रतीत होता है, क्योंकि उसकी व्यवस्थायें यहाँ-वहाँ एक जैसी कसौटियां अनुभव में आती हैं। अतः इस सर्वव्यापक के सर्वत्र फैले हुए प्राकृतिक, भौतिक कर्मों को देखो और समझो। ये अदृश्य हाथों से (होने वाली) जरूरतों को कैसे-कैसे पूर्ण कर रहे हैं। यत्र-तत्र-सर्वत्र एक-सा कार्य करते प्राकृतिक पदार्थ यहाँ-वहाँ फैले, समाए अदृश्य विष्णु के ही कर्म हैं। क्योंकि कोई संसारी इनको करने का दावा नहीं करता और न ही करता हुआ दिखाई देता है। ये कर्म ऐसे हैं, जो सर्वथा सत्य, यथार्थ व्यवस्थित, नियमित, सुसम्बद्ध हैं तथा सब के लिए एक से हैं। इन का प्रभाव सभी पर सभी के लिए विना पक्षपात के एक-सा ही होता है। हाँ, भोक्ता व्यक्ति की सहनशक्ति से ही अनुभूति में अन्तर हो जाए तो हो जाए। हाँ, इसको समझकर अनुभव करो कि **'यतो व्रतानि पस्पशे'** व्यापक अपने कर्मों के माध्यम से जगत् की व्यवस्था को भी चला रहा है। तभी तो इसका चमकता सूर्य अपने सौरमण्डल के लोक-लोकान्तरों को आकर्षण-विकर्षण-प्रत्याकर्षण से थामे हुए है। वहीं यहाँ-वहाँ उत्पन्न होने वाले अन्न आदियों को रस देता, पकाता भी है। तभी तो यह सूर्य केवल अपनी रश्मियों से उषा-उष्मा-ऊर्जा से ही लाभान्वित नहीं करता, अपितु इसकी गति के प्रभाव से काल गणना के आधार भूततत्त्व वर्ष, ऋतु, मास, दिन आदि रूप में सामने आते हैं। इसमें पृथिवी और चन्द्रमा की परिक्रमा विशेष सहयोगी बनती है। इसी प्रकार सूर्य, चन्द्र आदि के प्राकृतिक कर्मों के कारण अनेक व्यवस्थायें इस संसार में चल रही हैं।

बाह्यजगत् के चन्द्र, सूर्य के अनुरूप तथा उनके सहयोग से कार्य करने वाले शरीर में विराजमान नेत्र आदि प्रभावित, व्यवस्थित हैं। तभी तो ब्रह्माण्ड तथा पिण्ड की व्यवस्थाओं को समझकर दूरदर्शन आदि यन्त्र प्रकाश में आये हैं। इसी समझ के आधार पर ब्रह्माण्ड और पिण्ड का तारतम्य प्रकट हो रहा है। वह प्रभु इतना ही नहीं, अपितु **इन्द्रस्य युज्यः सखा-**

इस संसार का स्रष्टा, व्यवस्थापक, नियामक जहाँ निर्दिष्ट रूप संसार को चला रहा है, वहाँ इसके साथ शरीर के राजा का गहरा दोस्त भी है। आंख आदि के लिए होने वाला इन्द्रिय शब्द का प्रयोग इनको वर्तने वाले को इन्द्र सिद्ध करता है तभी तो कोई कह सकता है, कि ये नेत्र आदि इन्द्रियां इन्द्र के साधन, औजार कहलाते हैं। **इन्द्रियमिन्द्रलिंगम्**-पा० 5, 2, 93,1। ऐसे इन्द्र नामक जीवात्मा का विष्णु नामक प्रभु व्यापक होने से मित्रवत् हृदय देश में भी विराज रहा है। तभी तो उसके साथ दिल में बैठा हुआ अपने सखा के हित को ध्यान में रखकर जब भी किसी की भलाई में यह सहयोग करता है, तो वह व्यापक-व्याप्य सम्बन्ध रखने वाला विष्णु जीव को उत्साहित, प्रेरित करता है। आगे से आगे इस परम्परा को बनाये रखने के लिये आशा, उत्साह बनाए रखता है। कोई जब भी किसी को हानि, कष्ट पहुँचाने की सोचता है या स्वार्थ, लोभ के वश में पड़कर दूसरे का नुकसान करने का यत्न करता है तो प्रभु उसके मन में आशंका, लज्जा, भय, हिचक, झिझक उत्पन्न कर देता है। सामाजिकता का भय पैदा करके पकड़े जाने का डर उभारता है। गहरी दोस्ती का यह कितना प्रत्यक्ष प्रमाण हैं और इससे बढ़कर क्या प्रमाण हो सकता है? अन्य अनेक मन्त्रों में भी दोनों का सखा कहा है। यथा ऋ० 1.164.20

कई बार अनेक व्यक्तियों के मन में आशंका, विचार होता है कि यह संसार तो अपने आप चल रहा है? संसार को चलाने वाला ईश्वर नाम का कोई तत्त्व नहीं है? ऐसों को विचार बिन्दु देते हुए यह मन्त्र कहता है कि हे विचारशीलो! कभी अपने चारों ओर यहाँ-वहाँ फैले प्राकृतिक कर्मों पर कुछ गहरे पानी पैठकर विचार तो करो कि यह अद्भुत कर्म, रूप कैसे अपना रंग दिखा रहा है या इस भाव को ऐसे भी कह सकते हैं कि ईश्वर की सत्ता को अनुभव कराते हुए मन्त्र कहता है कि कभी उषाकाल पर विचार करो कि कैसे रात्रि का अन्धेरा छंटकर प्रकाश फैल जाता है। कभी प्रभात की ओस कणों को नरम-नरम घास पर चलकर अनुभव करो। सूर्य की रश्मियों को कभी प्रभात में देखो! कैसा दृश्य अनोखे रूप में उपस्थित हो जाता है। ऐसे ही वर्षा की जल बिन्दुओं के तारतम्य का विचार करो। तारों भरी रात ने कितनों को सोचने के लिए विवश किया है कि यह-यह किस कारीगर की कैसी अनोखी कारीगरी है? यह कैसी अनूठी व्यवस्था है?

वैदिक मिशनरी गम्भीर अस्वस्थ

वैदिक लेखक व मिशनरी पं० इन्द्रजित्देव बिहार के बरौनी नगर से वेदप्रचार करके लौटते समय रेल में गम्भीर अस्वस्थ हो गए। रेल विभाग ने उन्हें मुरादाबाद स्टेशन अस्पताल में प्रविष्ट कराया। वहाँ से उनके भाइयों ने पी.जी.आई. रोहतक में प्रविष्ट कराया। जहां उनके पेट की गम्भीर शल्यक्रिया हुई व वे चार दिन मूर्च्छित रहे। 25 दिन वे पीजीआई में ही डॉक्टर की सघन चिकित्सा में रहे। अलसर रोग की अन्तिम अवस्था से ग्रस्त देव जी 3 मास हैदराबाद में चिकित्साधीन रहने के बाद अब यमुनानगर आए हैं तथा चलने योग्य हुए हैं। **—मन्त्री, आर्यसमाज जगाधरी वर्कशाप (यमुनानगर)**

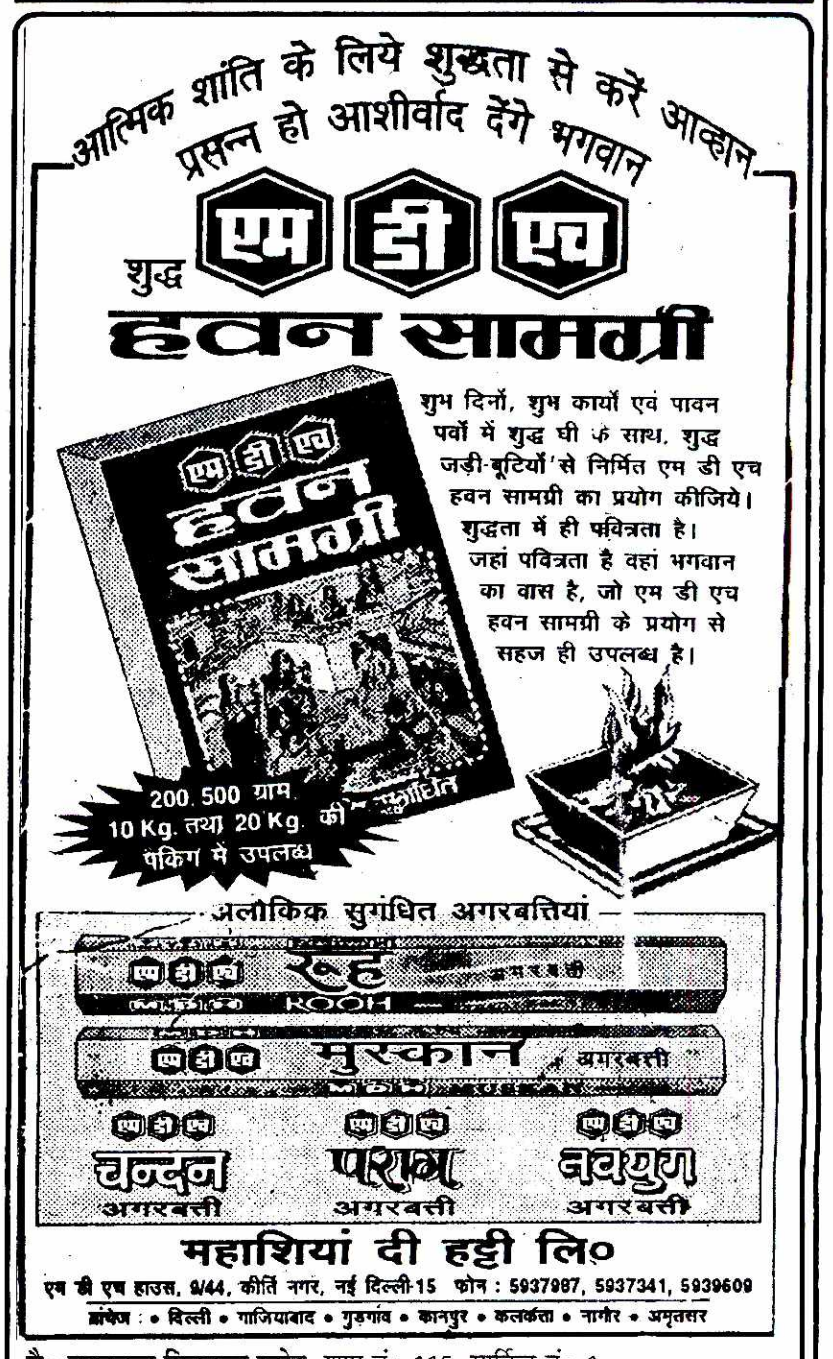

मै० कुलवन्त पिक्कल स्टोर, शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन.आई.टी., फरीदाबाद-121001 (हरि०)
मै० मेवाराम हंसराज, किराना मर्चेन्ट, रेलवे रोड, रिवाड़ी-123401 (हरि०)
मै० मोहनसिंह अवतारसिंह, पुरानी मण्डी, करनाल-132001 (हरि०)
मै० ओम्प्रकाश सुरिन्द्र कुमार, गुड़ मण्डी, पानीपत-132103 (हरि०)
मै० परमानन्द साईं दित्तामल, रेलवे रोड, रोहतक-124001 (हरि०)
मै० राजाराम रिक्खीराम, पुरानी अनाज मण्डी, कैथल-132027 (हरि०)

आर्य-संसार

गीता जयन्ती पर किया गायत्री महायज्ञ

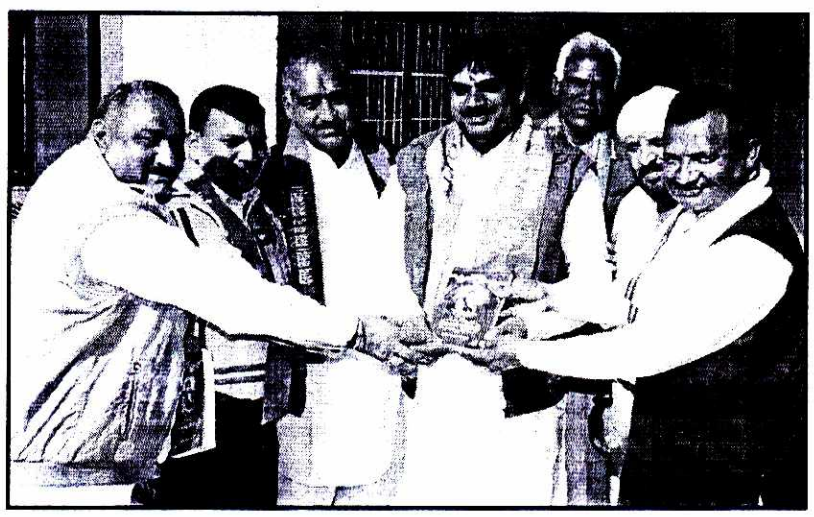

मुख्य अतिथि को पुरस्कार स्वरूप सत्यार्थ प्रकाश भेंट करते हुए।

हांसी, 13 दिसम्बर : वैदिक संस्कृति प्रचार मिशन के तत्त्वावधान में श्री गीता जयन्ती के पावन अवसर पर सैंट ज्ञानेश्वर सी.सै. स्कूल के प्रांगण में 8वां विश्वशांति गायत्री महायज्ञ आचार्य रामुसफल शास्त्री के ब्रह्मत्व में किया गया जिसके मुख्य अतिथि सुरेंद्र सचदेवा उपप्रधान नगर परिषद हांसी थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता हीरालाल सोनी ब्लाक कांग्रेस अध्यक्ष ने की। विशिष्ट अतिथि पार्षद रिंकू सैनी थे। कार्यक्रम में सपत्नीक यज्ञमान जेसीआई प्रधान सतीश वर्मा व उनकी पत्नी प्राचार्या संतोष वर्मा थे। यज्ञ के पुरोहित ब्र वरुण कुमार ने बताया कि स्वागतध्यक्ष मा. राम अवतार सिंह व संयोजक सरदार कृष्ण इलाहाबादी ने सभी अतिथियों को स्वागत किया। सभी आए हुए श्रद्धालुओं एवं विद्यालय के शिक्षक व विद्यार्थियों ने पवित्र वेदमंत्रों से आहुतियां प्रदान करके शांति अमन व चैन के लिए परमात्मा से प्रार्थना की। यज्ञोपरांत यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य रामसुफल शास्त्री ने कहा कि यज्ञ-हवन से वायुमंडल शुद्ध होता है जिससे रोगनाशक कीटाणुओं का नाश होता है, बीमारियों से निजात मिलती है। आचार्य प्रवर ने कहा कि हवन-यज्ञ से वातावरण को शुद्ध करना भी एक समाज सेवा व परोपकार का कार्य है जिसे आम आदमी भी कर सकता है।

इस अवसर पर वैदिक संस्कृति प्रचार मिशन के सरंक्षक राम अवतार लाम्बा, सचिव सावित्री देवी, कोषाध्यक्ष राकेश कुमार, प्रैस सचिव रमेश जैन, उपसचिव राकेश कालड़ा, सरदार बलवीर सिंह, अश्वनी ठकराल, सुनीता ठकराल, सुरेंद्र छावड़ा, कुलदीप चंदेला, चंद्र कांत शास्त्री, मनजीत कुमार, प्रताप यादव, कृपा शर्मा, शोनम, कविता, आशा यादव, पूजा, उमा गर्ग, जसविंद्र कौर, सुनीता, नीतू, इंद्रावती आदि मौजूद थे।

वैदिक सत्संग समारोह का आयोजन

आर्यसमाज गोहानामण्डी के **92वें मासिक वैदिक सत्संग समारोह** का आयोजन **दिनांक 12 जनवरी 2014, रविवार** को आर्यसमाज मन्दिर, गुढ़ा रोड, गोहाना (सोनीपत) में आयोजित किया जाएगा। इस सत्संग का आयोजन महीने के दूसरे रविवार को किया जाता है। आज संसार में भौतिक उन्नति खूब हो रही है लेकिन मानव की मानवता का ह्रास होता जा रहा है। संसार में सुख-शान्ति का वातावरण बनाने के लिए परमपिता परमात्मा द्वारा प्रदत्त वेद ज्ञान का प्रचार-प्रसार अति आवश्यक है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु आप सभी से निवेदन है कि सपरिवार एवं इष्ट-मित्रों सहित सभी कार्यक्रमों के समय पर उपस्थित होकर धर्मलाभ उठाकर अनुगृहीत करें।

आमन्त्रित वैदिक विद्वान् : प्रोफेसर ओमकुमार आर्य,
उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक
कार्यक्रम-12 जनवरी 2014 प्रातः 9 बजे से 12 बजे तक
यज्ञ, भजन, प्रवचन
निवेदक : आर्यसमाज गोहाना मण्डी (सोनीपत)

'इदं राष्ट्राय इदन्न मम' का.... प्रथम पृष्ठ का शेष....

था। यह इसलिये आवश्यक था कि यदि गुरुकुलीय शिक्षा राष्ट्र के नव निर्माण का एकमात्र उपाय है तो तप की उस भट्ठी में से प्रत्येक को गुजरना होगा, कोई भेदभाव नहीं किया जा सकता। समाज के आजकल के तथाकथित कर्णधारों को स्वामी जी के शुचि, स्वच्छ एवं पारदर्शी आचरण से सीख ग्रहण करनी चाहिये। उनकी कथनी और करनी में कोई अन्तर नहीं था, आजकल के स्वार्थी नेताओं की तरह नहीं कि कथनी यदि पूर्वोन्मुख है तो करणी पश्चिमोन्मुख।

राष्ट्र के लिए किये गये महान् कार्य की दृष्टि से देखें तो सन् 1918 एवं 1919 उनके लिये सर्वाधिक घटना-प्रधान वर्ष थे। वे दिन 'रोलेट एक्ट' के प्रति तीव्र आक्रोश एवं प्रचण्ड विरोध के दिन थे। ब्रिटिश सरकार का क्रूरतापूर्ण दमनचक्र भी जनाक्रोश के सैलाब को रोक नहीं पा रहा था। ऐसा ही एक सशक्त विरोध प्रदर्शन 30 मार्च 1918 के दिन चाँदनी चौक क्षेत्र [दिल्ली] में स्वामी जी के नेतृत्व में आयोजित किया गया। चाँदनी चौक गवाह है कि संन्यासी की सिंहगर्जना से गौरी हुकूमत कांप उठी थी तथा बंदूकों और संगीनों से पूरी तरह बेखौफ उक्त प्रदर्शन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ था। स्वामी जी सबके सर्वमान्य नेता थे—हिन्दुओं के भी और मुसलमानों के भी। उनके मुखारविन्द से निकले 'हम' शब्द का अभिप्राय था—'ह' से हिन्दू और 'म' से मुस्लिम। वे प्रथम और अब तक के अन्तिम हिन्दू नेता थे जिनको मुसलमान भाइयों ने ऐतिहासिक जामा मस्जिद की मिम्बर पर से वेदमंत्र बोलकर सभा को संबोधित करने की स्वीकृति दी थी। स्वामी जी ने **'ओं त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो...'** वेदमंत्र बोलकर व्याख्यान दिया था और फिर 6 मार्च 1918 को फतहपुरी मस्जिद में भी स्वामी जी को व्याख्यान के लिये आमंत्रित किया गया था। कुछ गैर-मुस्लिम नेता तुष्टिकरण का राग अलापते-अलापते संसार से चले गये किंतु जामा मस्जिद से सभा को संबोधित करने का कोई अवसर उन्हें जीवन पर्यन्त नसीब नहीं हुआ।

इतना ही नहीं यह स्वामी जी का दमखम ही था कि जब 'जलियाँवाला बाग' के रोंगटे खड़े कर देने वाले पैशाचिक खूनी काण्ड से हर छोटा-बड़ा भयभीत था और कांग्रेसी नेता अपना उस वर्ष [1919] का वार्षिक अधिवेशन अमृतसर में करने से कतरा रहे थे, तब स्वामी जी आगे आये, अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष बने और शानदार सफलता के साथ अधिवेशन सम्पन्न करवाया। वे अपने प्रिय राष्ट्र और राष्ट्रवासियों के लिये कोई भी जोखिम उठा सकते थे। वे सच्चे राष्ट्र-भक्त और राष्ट्रवादी संन्यासी थे। ईश्वर में उनका अडिग विश्वास था, वे महर्षि दयानन्द और वैदिक धर्म के निष्ठावान् अनुयायी थे। अथर्ववेद के काण्ड-12 सूक्त-10 मंत्र 1-63, यजु० 22/22 ऋग्वेद 1/80 सभी मंत्र तथा अन्यान्य वेदमंत्रों में राष्ट्र विषयक जो उदात्त अवधारणा एवं परिकल्पना है स्वामी जी का उन सब में अटूट एवं अडोल विश्वास था। उन मंत्रों को उन्होंने मात्र पढ़ा ही नहीं था अपितु उनको जीवन में जीया था। इन मंत्रों से ही उन्होंने **'इदं राष्ट्राय इदन्न मम'** का पाठ सीखा था जिस पाठ की भावना के वे प्रतीक बन गये थे, मूर्तरूप बन गये थे। उसी पथ का पथिक बनकर अंततोगत्वा 23 दिसम्बर 1926 के दिन वे राष्ट्र के लिये अपना जीवनोत्सर्ग करके अमरता के अमिट हस्ताक्षर बनकर इतिहास के पृष्ठों पर अंकित हो गये। हम उस महान् राष्ट्रनायक को कोटिशः नमन करते हैं इन शब्दों में—

संन्यासी तुम ऊँचा कर गये भारत-भू का माथा।
युगों-युगों तक गायेगा इतिहास तुम्हारी गाथा॥
संकट की घड़ियों में ये आकाश के चांद-सितारे।
तेरा आह्वान किया करेंगे अपनी भुजा पसारे॥
जब तक बहेगी हिमगिरि से गंगा की निर्मल धारा।
तब तक अमर रहेगा स्वामी प्रेरक नाम तुम्हारा॥
तुम प्रहरी थे देश धर्म के तुम अमर बलिदानी।
तुम युग-नायक, युग-प्रवर्तक तुम अदम्य सेनानी॥
तेरे पदचिह्न अमिट रहेंगे क्रूर काल की छाती पर।
'इदं राष्ट्राय इदन्न मम' से गुंजित रहेंगे अवनी अंबर॥

सम्पर्क—1607/7, जवाहर नगर, पटियाला चौक, जीन्द-126102 (हरयाणा)
मो० 09416294347, फोन 01681-226147

www.thearyasamaj.org

अन्तर्राष्ट्रीय मंच से अर्जुनदेव चड्ढा का ओजस्वी उद्‌बोधन

विश्व एड्स दिवस पर दक्षिण अफ्रीका के डरबन में दिया जागरूकता वक्तव्य

कोटा, 6 दिसम्बर। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिनांक 28 नवम्बर से 1 दिसम्बर 2013 तक साउथ अफ्रीका के डरबन महानगर में आयोजित हुआ जिसमें 1 दिसम्बर को कार्यक्रम का एक सत्र चिकित्सा विषय पर आधारित था। उक्त सत्र में लगभग आठ देशों के स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने डरबन के सिटी हॉल में सभा को सम्बोधित किया।

चिकित्सा सत्र में भारत से कोटा राजस्थान के प्रतिनिधि श्री अर्जुनदेव चड्ढा को वक्तव्य के लिये मंच पर आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. रामविलास ने अर्जुनदेव चड्ढा का परिचय दिया।

अर्जुनदेव चड्ढा ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि आज 1 दिसम्बर को विश्व एड्स दिवस है अत: हमें एड्स बचाव जागरूकता पर अधिक बल देना होगा। एड्स बीमारी की जानकारी सर्वप्रथम साउथ अफ्रीका से ही प्रारंभ हुई थी। अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि एड्स बीमारी के बारे में विश्वभर में लोगों को सचेत किया जा रहा है, क्योंकि हर जीवधारी में दो तरह की भूख होती है एक नाभि से ऊपर और एक नाभि से नीचे (शारीरिक) और दोनों ही भूख को शांत करने के लिए वह किसी भी हद तक जा सकता है। हम मानव हैं और हमें अच्छी तरह से अच्छे बुरे का ज्ञान है। एड्स पीड़ित व्यक्ति से शारीरिक सम्बंध स्थापित करने से यह बीमारी गुणा के हिसाब से फैलती है।

श्री चड्ढा ने बताया कि उन्होंने सैंकड़ों एड्स पेसेन्ट देखे हैं जिसमें एक भी आर्यसमाजी नहीं था, कारण आर्यसमाज वह फैक्ट्री है जिसमें मनुष्य का चरित्र निर्माण किया जाता है और चरित्रवान् व्यक्ति को एड्स हो ही नहीं सकती, क्योंकि वह एक पत्निव्रत अथवा पतिव्रता धर्म निभाता है।

श्री चड्ढा ने अपने भाषण में कहा कि दुनिया में सभी अपराधों की जड़ नशा है और नशा करने के बाद व्यक्ति अधिक कामी हो जाता है और अपनी इस शारीरिक भूख को मिटाने के लिये सैक्स वर्कर के पास पहुचंता है।

श्री चड्ढा ने बताया कि उन्होंने राजस्थान के अनेक देह व्यापार के केन्द्रों पर जाकर समझाइश की। उन्होंने सैक्स वर्कर्स को सिर्फ सुरक्षित यौन सम्बंध स्थापित करने की सलाह दी। अभी भी आवश्यकता है निरन्तर एड्स जागरूकता व काउन्सिलिंग की। इस संबंध में हम सभी को मिलकर प्रयास करना होगा, क्योंकि एड्स का दूसरा नाम है मृत्यु और हमें लोगों को इससे बचाना होगा। गलती एक व्यक्ति करता है और उसकी चिंता सारे विश्व को हो रही है।

चड्ढा ने एड्स के बारे में फैली भ्रामक विषयों की भी चर्चा की। हमें जागरूक होकर इस बीमारी से मानव जाति को बचाना होगा। भारत में एड्स बचाव जागरूकता के कारण इसके नए रोगियों की काफी कमी हो गई है। श्री चड्ढा के भाषण के पश्चात् मंच से उतरते ही उनके ओजस्वी व भावपूर्ण वक्तव्य की सभी ने प्रशंसा की, जिसमें **स्वामी धर्मानन्द** उड़ीसा, **आचार्य बलदेव** (स्वामी रामदेव के गुरु), **स्वामी ब्रह्मानन्द जी, ब्रह्मचारी राजसिंह, विनय आर्य, वाचोनिधि आर्य,** कार्यक्रम के संचालक **डॉ. रामविलास** व कई देशों के प्रतिनिधि सम्मिलित थे।

—अरविन्द पाण्डे, कार्यालय एवं प्रचार सचिव, मो. 09799498477

स्वभाव को जानें व सुधार करें

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

महर्षि दयानन्द ने मन्त्रों का साक्षात् किया, समाधि सिद्ध की। निजी रूप में वे आनन्द में रहते थे। विद्या प्राप्त करने का, ईश्वर को अनुभूत करने का सुख कितना बड़ा होता है, इसे तो वे ही जानते थे। यदि उन्हें कभी शारीरिक कष्ट हो जाता था या दुष्ट लोग उन्हें मानसिक पीड़ा पहुँचाने का प्रयास करते थे तो वे उस सबको भी सहज ही या हंसते हुए सहन कर लेते थे। अब उन लोगों के बारे में आप क्या कहेंगे जिनका स्वामी जी उपकार चाहते थे और वे लोग बदले में उनसे ईर्ष्या, द्वेष, छल-कपट वर्त्त कर उन्हें कष्ट पहुँचाने का प्रयास करते थे। ऐसे लोगों की वृत्ति ऐसी होती है कि उन्हें कोई दु:खी नहीं करता लेकिन वे स्वयं ही उपकार चाहने वालों के प्रति भी ईर्ष्या, द्वेष, छल-कपट करके या दूसरे की उन्नति में डाह रखकर स्वयं दु:खी रहते हैं। इस प्रकार ऐसे लोग संसार में दु:ख बढ़ाने के हेतु बनकर महापाप के भागी बनते हैं।

ऋषियों ने संसार का दु:ख मिटाने के लिए स्वभाव सुधार पर बल दिया। 'आर्याभिविनय' उपक्रमणिका विचार में महर्षि जी परमेश्वर से भी सब प्रकार के मनुष्यों के लिए उत्तमता की कामना, प्रार्थना करते हैं। सत्यार्थ प्रकाश के नवम समुल्लास में मनुस्मृति का उदाहरण देते हुए ऋषि ने स्पष्ट किया है—''मनुष्य इस प्रकार अपने श्रेष्ठ, मध्य और निकृष्ट स्वभाव को जानकर उत्तम स्वभाव का ग्रहण, मध्य और निकृष्ट का त्याग करें और यह भी निश्चय जाने कि यह जीव मन से जिस शुभ या अशुभ कर्म को करता है उसको मन, वाणी से किये को वाणी और शरीर से किये को शरीर से अर्थात् सुख-दु:ख को भोगता है।''

आजकल स्वभाव निकृष्ट बनने से ही सर्वत्र दु:ख फैल रहा है। व्यक्ति स्वयं अपने लिए दु:ख पाल रहा है व उसे संसार में फैला रहा है। शत्रु को मित्र बनाने का गुण तो दूर हम मित्र को ही शत्रु की दृष्टि से देखकर वर्त्ताव कर 'सभी को मित्र की दृष्टि से देखें', इस सिद्धान्त की धज्जियां उड़ा रहे हैं। कोई व्यक्ति किसी के प्रति विनम्रता, सज्जनता, शिष्टाचार वर्त्तता है तो ऐसे व्यक्ति को भी संशय की दृष्टि से देखा जाता है। ऐसे व्यक्ति को कायर व स्वार्थी समझा जाने लगा है। पग-पग पर कृतघ्नता देखी जा सकती है। जिसका आपने उपकार किया है आप उसी के हँसी व विरोध के पात्र बन जाते हैं। वगैर प्रसंग, संदर्भ, परिस्थिति, समय, व्यक्ति आदि का चिंतन किए निंदा करना एक वृत्ति बन चुकी है। सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास में निन्दा करने को काम से उत्पन्न दोषों में गिनाया है।

अत: निन्दा करने वाला व्यक्ति कामी होता है। आचार्य बलदेव व आचार्य विजयपाल के साथ लगभग 8-10 वर्ष तक कार्य करने का सुअवसर मिला। दोनों को कभी किसी की निन्दा करते नहीं सुना। दोनों पर क्या-क्या अनर्गल आरोप नहीं लगे? लेकन मौन रहकर आगे बढ़ते रहे। ऐसे लोग ही मुनि होते हैं। अत: स्वभाव को पहचाने, सुधार के लिए पुरुषार्थ करें व इसके लिए परमात्मा से प्रार्थना करें, क्योंकि वह परमात्मा 'भर्ग:' है।

हे आत्मन्, सावधान!..... पृष्ठ 2 का शेष....

असहाय-सी हो जाती है। ऐसे में एक ही उपाय रह जाता है और वह है प्रभु की शरण। प्रभु के प्रति समर्पित होते हुए आत्मा पुकार उठती है।

ओ३म् पवमान: पुनातु मा, क्रत्वे, दक्षाय, जीवसे।
अथो अरिष्टताजये॥ (अथर्ववेद)

हे पवित्रता के अनुपम, अद्वितीय, दिव्य स्रोत प्रभो! मुझे पवित्र कर दो, निर्मल कर दो जिससे मैं पवित्र होकर सच्चा क्रतुमान बन सकूँ यानि मेरी प्रज्ञा और कर्म, मेरी बुद्धि और मेरा कार्य दोनों पवित्र हो जायें। जैसे प्रज्वलित अग्नि में ईंधन डालने से, सारी की सारी ईंधन भस्मसात् हो जाती है, मुझमें भी ऐसी ज्ञान-अग्नि प्रज्वलित कर दें कि मेरे सब अशुभ विचार, दुष्कर्म, पाप-कर्म, उस ज्ञान-अग्नि में जलकर भस्म हो जायें, नष्ट हो जायें। झरने की भांति भीतर से ही ज्ञान फूटने लगे, ध्यान पकने लगे।

हे पवमान! हे प्रभो ऐसी कृपा करो कि मैं आपके द्वारा पवित्र हो, मानसिक और आत्मिक बल को प्राप्त कर, अपनी इन्द्रियों का स्वामी बन जाऊँ। आपके आनन्द की अनुभूति कर सकूँ।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **सत्यवीर शास्त्री** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।